Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 4, June-2018, ISSN 2230-7540

विश्वपटल पर हिन्दी भाषा

Reena Saroha*

M.A. in Hindi, UGC NET (Hindi), Research Scholar, Department of Hindi, NIILM University Kaithal, Village & Post - Rathdhana, District-Sonipat

सार – *जब हम विश्व के रंगमंच पर खड़े होकर विहंगम दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि विगत कुछ वर्षों से हिन्दी का वैश्विक मंच विशाल से विशालतर होता जा रहा है। राष्ट्र-संघ में हिन्दी की स्थापना का प्रयास, विश्व हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन आदि ऐसे उपक्रम हैं जिससे हिन्दी की वैशिवक क्षमता सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। अब हिन्दी एकदेशीय नहीं अपितु बहुदेशीय भाषा का रूप ले चुकी है। हिन्दी बोलने वालों की दृष्टि से हिन्दी संसार की तृतीय बड़ी भाषा है। इस समय भारत के बाहर शताधिक विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों में हिन्दी का पठन-पाठन इस बात का द्योतक है कि हिन्दी मात्र साहित्य की चीज नहीं वरन् वह हृदयोंको जोड़ने वाली भाषा है।[1] वर्तमान समय में हिन्दी को लेखन एवं प्रचार-प्रसार प्रायः दो रूपों में हो रहा है। प्रथम के अन्तर्गत वे देश आते हैं, जहाँ के लोग हिन्दी को एक विश्व भाषा के रूप में 'स्वांत सुखाय' सीखने, पढ़ते-पढ़ाते हैं। इसके अन्तर्गत रूस, अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, इटली, बेल्जियम, फ्रांस, चैकोस्लोवाकिया, रूमानिया, चीन, जापान, नार्वे, स्वीडन, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया, मैक्सिको आदि देश आते हैं। दूसरे के अंतर्गत वे देश आते हैं जहाँ भारत से जाने वाले प्रवासी भारतीय और भारतवंशी लोग बड़ी संख्या में निवास करते हैं, जिनकी मातृभाषा हिन्दी है। भारतवंशी लोग मॉरीशस, फिजी, गुयाना, सूरीनाम, कीनिया, ट्रिनीटाड-टुबैगो, बर्मा, थाईलैण्ड, नेपाल, श्रीलंका, मलेशिया, दक्षिणी अफ्रीका आदि देशों में रह रहे हैं। इन दोनों प्रकार के देशों में हिन्दी का रचना-संसार बहुत ही विपुल एवं समृद्ध है। वस्तुतः विश्व भाषा हिन्दी भारतीय संस्कृति 'वसुधैव कुटुम्बकम' को लक्ष्य करके प्रसारित हो रही है। विदेशों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार आकाशवाणी, दूरदर्शन, पत्र-पत्रिका, कम्प्यूटर आदि के माध्यम से हो रहा है।*

----------X----------

विश्वभाषा हिन्दी बनाम साहित्य-सृजन:

हिन्दी-साहित्य सृजन के क्षेत्र में मॉरीशस का महत्त्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी में इनका कृतित्व उल्लेखनीय है। यहाँ के लेखकों की लगभग दो सौ कृतियाँ उपलब्ध हैं, जिनमें साहित्य, इतिहास, संस्कृति, धर्म विषयक आदि सभी प्रकार की रचनाएँ हैं। मधुकर, इस देश के बहुचर्चित कवि हैं। उनकी कविताओं का पहला संग्रह 'मधुपर्क' है। इस कवि के लगभग बीस कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। मुनीश्वरलाल चिंतामणि भी इस देश के प्रसिद्ध कवि हैं। उनका 'शांतिनिकेतन की ओर' काव्य-संग्रह उल्लेखनीय है। सोमदत्त बखौरी मुक्त छंद के प्रौढ़तम कवि हैं। उनके दो काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए हैं, जिनके शीर्षक हैं- 'आकाश गंगा' और 'तरंगिनी'। हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में अभिमन्यु अनत का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनके ग्यारह उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। विष्णुदत्त मधुचन्द्र का 'फट गई धरती' चर्चित उपन्यास है। मॉरीशस के कहानीकारों में दीपचंद बिहारी, बृजलाल रामदीन, प्रेमचंद मूली, भानुमति नागदान आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इस देश के नाटककारों में जयनारायण राय का नाम उल्लेखनीय हैं। उनके चर्चित नाटक का शीर्षक 'जीवन संगिनी' है।[2]

फीजी का भी हिन्दी साहित्य-सृजन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। जोगिन्द्र सिंह कँवल फीजी के चर्चित उपन्यासकार हैं। उनके चर्चित उपन्यासों के शीर्षक हैं - 'धरती मेरी माता', 'सवेरा'। श्री बेनीलाल मोरिस की पुस्तक 'गली गली सीता रोए' फीजी लोक साहित्य की चर्चित रचना है। इंग्लैण्ड में भी अनेक हिन्दी साहित्य सेवी हुए हैं। जिनमें प्रमुख हैं- दिव्या माथुर, गौतम सचदेव, उषा राजे सक्सेना, मोहन राणा, सत्येन्द्र श्रीवास्तव, उषा वर्मा, राकेश माथुर, के.जी. खंडेलवाल। इन लेखकों ने कविता, कहानी, उपन्यास नाटक आदि विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। नेपाल का भी साहित्य-सृजन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। जगत् ज्योतिर्मल्ल एवं जयस्थिति मल्ल ने हिन्दी-भजनों व नाटकों का सृजन किया है। मानवीर कछिपति ने एक हिन्दी नाटक की रचना की जिसका शीर्षक है- 'श्रीकृष्णचरित्र प्यास'। मल्लकाल ने भी अनेक नाटक लिखे हैं, जिनके संवाद हिन्दी में हैं। आशु कवि शंभु प्रसाद दुंगेल मोतीराम भट्ट, गिरीश वल्लभ जोशी, रघुनाथ भाट,

www.ignited.in

उदयानंद अज्ञात आदि की गणना हिन्दी-कवियों में की जाती है। भवानी भिक्षु एक अच्छे उपन्यासकार हैं। सरदार रुद्राज पांडेय, लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा, सूर्य विक्रम झबाली, सिद्धीचरण केदारनाथ 'व्यथित' आदि लेखकों ने हिन्दी में अनेक रचनाएँ लिखी हैं। शुभ प्रसाद ने 'प्रेमकांता' उपन्यास लिखा है जो बारह भागों में प्रकाशित है। गिरीश वल्लभ हिन्दी में जोशी ने 'गिरीशवाणी' उपन्यास लिखा है। हिन्दी-रचनाकारों में मोहनराज शर्मा, चेतन कार्की, दुर्गाप्रसाद, धुरवचंद गौतम आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।[3]

विश्वभाषा हिन्दी बनाम पत्र-पत्रिकाएँ:

हिन्दी पत्रकारिता की दृष्टि से मॉरीशस में सर्वप्रथम 15 मार्च, 1909 को 'हिन्दुस्तानी' साहित्यिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ, जो हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती में एक साथ प्रकाशित होता था। इस देश के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. मणिलाल ने 'मॉरीशस आर्य पत्रिका' का संपादन किया। सन् 1920 में इंडो मॉरीशस संघ के तत्त्वावधान में 'मॉरीशस इंडियन टाइम्स' का प्रकाशन हुआ। सन् 1924 में गजाधर राजकुमार के संपादकत्व में 'मॉरीशस मित्र' नामक पत्र का प्रकाशन हुआ। पं. काशीनाथ किष्टो ने 'आर्यवीर' पत्र का प्रकाशन किया। इस देश में 'इंडियन कल्चर रिव्यू', 'वसंत' आदि पत्रों का भी प्रकाशन हुआ। 'आर्योदय', 'जमाना', 'अनुराग', 'आभा', 'दर्पण', 'रणभेरी' आदि पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी इस देश में हुआ है। फिजी में भी अनेक हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई, जिनके शीर्षक हैं- 'भारत पुत्र', 'बुद्धिवाणी', 'वैदिक संदेश', 'सनातन धर्म', 'शांतिदूत', 'मजदूर', 'जागृति', 'झंकार', 'जय फ़िजी' आदि। सूरीनाम में भी अनेक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई जिनके शीर्षक हैं- 'आर्यदिवाकर', 'सरस्वती', 'भारतोदय', 'वैदिक संदेश', 'प्रेम संदेश', 'शांतिदूत' आदि। गुयाना में 'आर्य-ज्योति', 'ज्ञानदा' आदि पत्रों का प्रकाशन हुआ। ट्रिनीटाड-टुबैगो में 'ज्योति' नामक पत्र का प्रकाशन हुआ। दक्षिणी अफ्रीका में भवानीप्रसाद के संपादकत्व में 'हिन्दी' नामक पत्र का प्रकाशन हुआ। बर्मा के श्यामचरण मिश्र के संपादकत्व में 'प्रवासी' साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन हिन्दी में हुआ। 'ब्रह्मभूमि', 'आर्य युवक जागृति' आदि पत्रों का प्रकाशन भी हुआ। नेपाल के काठमंडु से 'नेपाली' हिन्दी दैनिक का प्रकाशन हुआ। इस देश में 'साहित्य-लोक', 'आरोहण' आदि पत्रों का भी प्रकाशन हुआ है। इंग्लैंड विश्व का पहला राष्ट्र है, जहां से सर्वप्रथम 1883 में कालाकांकर नरेश के सम्पादकत्व में 'हिन्दोस्थान' पत्र का प्रकाशन हुआ।[4] 'अमरदीप', 'प्रवासिनी' आदि हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ भी इस देश की धरोहर हैं। कनाडा में भारतीयों का बोलबाला है। 'विश्वभारती', 'जीवन ज्योति' आदि इसदेश की चर्चित हिन्दी पत्रिकाएँ हैं। रूस से भी कई पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं, जिनके शीर्षक हैं- 'सोवियत संघ', 'सोवियत नारी' आदि। जापान का प्रथम हिन्दी-पत्र 'ज्वालामुखी' है, जिसका प्रकाशन टोकियो से होता है। 'अंक' व 'सर्वोदय' पत्र भी उल्लेखनीय हैं।[5]

विश्वभाषा हिन्दी बनाम हिन्दी-शिक्षण:

बड़े हर्ष की बात यह है कि विश्व के लगभग 120 विश्वविद्यालयों में हिन्दी के अध्ययन हेतु केन्द्र खुले हुए हैं। अकेले अमेरिका में बीस केन्द्रों में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिटाड देशों में भारत-मूल के निवासियों की उल्लेखनीय संख्या होने के कारण वहाँ हिन्दी के अनेक प्रशिक्षण केन्द्र खुले हुए हैं। विश्व के प्रमुख देशों में हमारे देश के दूतावास हैं जो हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभा रहे हैं। शैक्षणिक हिदी का वास्तविक अन्तर्राष्ट्रीय प्रसार यूरोप और एशिया के कुछ देशों में हुआ है। पूर्वी और पश्चिमी यूरोप में कुल मिलाकर तीन दर्जन विश्वविद्यालयों और संस्थानों में हिन्दी-शिक्षण की व्यवस्था है। कनाडा के लगभग दो दर्जन विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। ऐशिया में नेपाल ही एक ऐसा देश है, जहाँ हिन्दी को उच्चतम शिक्षा तक स्थान मिला है।[6] श्रीलंका के कोलम्बो विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग खुला हुआ है। जापान में भी लगभग छह विश्वविद्यालयों और संस्थाओं में हिन्दी के पाठ्यक्रम चलते हैं, जिनमें हिन्दी की उच्च शिक्षा की व्यवस्था है। जापान के टोक्यो और ओशाका के विदेशी भाषा विश्वविद्यालय में हिन्दी के चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम की व्यवस्था है। विदेशों के अनेक विश्वविद्यालयों और संस्थानों में हिन्दी-उर्दू के सम्मिलित विभाग हैं।

विश्वभाषा हिन्दी बनाम अनुवाद:

यूरोप, अमेरिका और एशिया के अनेक देशों में हिन्दी की अनेक कृतियों के अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन और रूसी में अनुवाद हुए हैं, जिससे हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ी है।7 इन भाषाओं में हिन्दी के द्विभाषी कोश, व्याकरण, इतिहास और समीक्षा सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण शोधपरक और परिचयात्मक प्रकाशन भी हुए हैं। जापान के प्रोफेसर दोई ने प्रेमचंद के 'गोदान' उपन्यास का जापानी भाषा में अनुवाद किया है जिसकी लाखों प्रतियाँ बिक चुकी हैं। निराला, पंत, दिनकर और अज्ञेय की कविताओं के अनुवाद जापानी भाषा में हुए हैं। चीन में रामायण की अनुदित कहानियाँ बहुत लोकप्रिय हैं। चीन के प्रोफेसर जिन डिंगहेन ने 'रामचरित मानस' का चीनी भाषा में पद्यानुवाद किया है, जिसकी लाखों प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक गईं। चीन के प्रोफ़ेसर ल्यूकोनान ने फणीश्वरनाथ 'रेणु' के

'मैला आँचल' का चीनी भाषा में अनुवाद किया है, जिसकी हजारों प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक गईं। चीन की लेखिका डॉ. श्रीमती उषा शर्मा ने चीनी लोककथाओं का हिन्दी में अनुवाद किया है। रूस के प्रोफेसर योगेन्द्र नागपाल ने 693 पृष्ठों का 'हिन्दी व्याकरण' प्रस्तुत किया है जो हिन्दी-शिक्षण में पूर्णतः सक्षम है। सन् 1948 में सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी द्वारा तुलसीकृत 'रामचरित मानस' का रूसी भाषा में छंदोबद्ध अनुवाद प्रकाशित हुआ है, जिससे हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ी है।[8] अमेरिका के प्रोफेसर माइकेल सी. शेपिरो ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा है। अमेरिका में हिन्दी के भक्ति-साहित्य पर, तुलसी, मीरा, कबीर, विद्यापति, जायसी पर अनेक पुस्तकें अंग्रेजी में प्रकाशित हुई हैं। सूरदास के 'सूरसागर' के अंग्रेजी अनुवाद की परियोजना चल रही है। अमेरिका के प्रोफेसर के. शोमर राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि की लोककथाएँ एकत्र करके उनका अनुवाद अंग्रेजी में कर रहे हैं।[9]

विश्वभाषा हिन्दी बनाम कम्प्यूटर:

सुप्रसिद्ध विदूषी डॉ. सरोज गुप्ता के मतानुसार आज लगभग दो सौ से अधिक कम्प्यूटर भाषाएँ प्रचलन में हैं। इसकी अपनी नियमावली है, जिसके द्वारा मुद्रण, टंकण, कोश निर्माण, भाषा प्रशिक्षण, सूचना संचयन, संपादन, मशीनी अनुवाद, पाठ-बोधन, स्पीच टू टैक्स्ट सिस्टम इत्यादि कार्य संपादित होते हैं। इंटरनेट, वेब डिजाइनिंग, रोबोटिक्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आदि क्षेत्रों के लिए अनेक कम्प्यूटर भाषाएँ प्रचलित हैं।10 विश्व के प्रथम हिन्दी पोर्टल का विकास वेब दुनिया 'डॉट कॉम' (इंडिया लिमिटेड) को है। इस पोर्टल के जनक विनय छजलानी हैं। छजलानी ने प्रवासी हिन्दी भाषा-परिवारों की जरूरतों को पूर्ण करते हुए इन्टरनेट पर हिन्दी का प्रयास किया। यह वेबसाइट अत्यंत लोकप्रिय हुई और यहाँ से देवनागरी लिपि की शक्ति और संभावनाएँ उजागर हो गईं।11 कम्प्यूटर पर नागरी लिपि में कार्य करने हेतु सॉफ्टवेयर आई.बी.एम. पी.सी. कम्प्यूटर पर द्विभाषिक शब्द-संसाधन के लिए पर्याप्त शब्द-संसाधन पैकेज भी बाजार में सुलभ हैं, जिनके विभिन्न सुविधाएँ निहित हैं- 1.देवनागरी-सी बेसिक कम्पाइलर 2. द्विभाषिक डाटाबेस प्रबंधन-प्रणाली देवबेस 3. फैक्ट बहुभाषी व्यापार एकाउटिंग सॉफ्टवेयर 4. सुलिपि डी.बेस 5. आई.बी.एम. हिन्दी पी.सी. डॉस 6. श्री लिपि 7. अक्षर विंडोज आदि। हिन्दी के विकास में अनुवादक सॉफ्टवेयर भी महत्त्वपूर्ण प्रतीत हो रहा है। यह सॉफ्टवेयर अंग्रेजी के मूल पाठ को हिन्दी में अनुवाद कर व्याकरण की अनुपालना करता है। इससे हिन्दी को वैश्विक स्वरूप मिलता है। कृत्रिम बुद्धियुक्त यह सॉफ्टवेयर वैज्ञानिक भाषा से, प्रशासनिक भाषा से अनुवाद कर सकता है। कम्प्यूटर द्वारा हिन्दी के नए शब्दों और प्रयोगों को अप-टू-डेट किया जा सकता है। कम्प्यूटर के हिन्दी अक्षर बेहद आकर्षक हैं। आज कामकाजी हिन्दी का प्रयोग प्रशासन में होने लगा है। प्रत्येक दफ्तर, शिक्षा संस्थान, उद्योग व्यापार जगत्, बैंक, बीमा, रेल-बस, आरक्षण, तालिका निर्माण, चिकित्सा क्षेत्र, अनुसंधान क्षेत्र, टी.वी. से लेकर इंटरनेट तक अनेक सुविधाएँ कम्प्यूटर के द्वारा प्राप्त हैं। जहाँ-जहाँ कम्प्यूटर का प्रयोग होगा, हिन्दी देवनागरी लिपि का प्रचार-प्रसार स्वतः होता जाएगा। पश्चिमी देश लिपि की वैज्ञानिकता से प्रभावित होंगे और व्यवहार में हिन्दी का प्रयोग स्वतः ही विदेशों में भी होगा।[12]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है। आशा की जा सकती है कि हिन्दी भाषा और साहित्य स्वयं अपने बल पर समृद्धि और गौरव अर्जित करेगी। वैश्विक परिदृश्य में भारत में अवस्थित कम्पनियाँ अपने कर्मचारियों को हिन्दी सीखने के लिए आग्रह कर रही हैं। इससे हिन्दी के वैश्विक स्वरूप में इजाफा होगा।

संदर्भ

1. सिद्धेश्वर प्रसाद, 'विश्व हिन्दी', पृ. 173
2. वही, पृ. 179
3. वही, पृ. 291-92
4. वही, पृ. 174
5. वही, पृ. 197
6. वही, पृ. 197
7. वही, पृ. 198
8. रामकुमार गुप्त, साहित्य, भक्ति और दर्शन का वैभव, पृ. 1231
9. वही, पृ. 1233
10. वही, पृ. 1254
11. वही, पृ. 1255
12. वही, पृ 1260

Corresponding Author

Reena Saroha*

M.A. in Hindi, UGC NET (Hindi), Research Scholar, Department of Hindi, NIILM University Kaithal, Village & Post - Rathdhana, District-Sonipat